ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-८८
दिनांक-शुक्रवार,८ नवम्बर,२०१६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३०.२ एवं १६.८ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६५ प्रतिशत, हवा की औसत गति ३.८ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ३.५ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ६.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २०.८ एवं दोपहर में २८.६ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(६-१३ नवम्बर,२०१६)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ६-१३ नवम्बर,२०१६ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल रह सकते हैं। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान २८ से ३० डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान १७ से १६ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन ५ से ८ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से अगले २ दिनों तक पूरवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- बैगन की फसल में फल एवं कलगी वेधक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू बैगन के कोमल टहनियों, तनों में छेद कर के सुरंग बनाती हुई अन्दर घुस जाती है जिससे ऊपर की फुन्गी मुरझाकर लटक जाती है। पौधे में फल आने पर यह पिल्लू फलों के बाह्य दल के अन्दर छेद करके फलों में प्रवेश करती है फलों के अन्दर गूदा को खाती है तथा कभी-कभी फफूंद रोग उत्पन्न करती है। ग्रसित फल टेढ़े-मेढ़े हो जाते है और खाने योग्य नहीं रहते है। इसकी रोकथाम के लिए स्पिनोसेड ४८ इ०सी०/१ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे। छिड़काव से पूर्व इस कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें।
- मक्का, मटर, मसूर एवं राजमा की १५ से २० दिनों की फसलों में कजरा (कटुआ) पिल्लू की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन फसलों के छोटे-छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है। यह पिल्लू अधिकतर दिन में भूमि के अन्दर दरारों में या ढ़ेलों के नीचे छिपी रहती है और इन कटी शाखाओं को जमीन के अन्दर ले जा कर दिन में भी खाती है। यह खाती कम नुकसान अधिक करती है। इसकी रोकथाम के लिए बुआई से पूर्व खेत की सिंचाई करने पर इसके पिल्लू दरार से बाहर निकलते हैं एवं पक्षियों द्वारा शिकार हो जातें हैं। खड़ी फसलों में बीच-बीच में घास-फूस के छोटे-छोटे ढ़ेर शाम के समय लगा देते हैं। रात्री में यह कीट फसलों को खाकर इसी ढ़ेर में छिप जाती है। किसान सुबह में छिपे पिल्लू को चुनकर नष्ट कर देतें है। अधिक नुकसान होने पर क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।
- राई-तोरी-सरसों की फसल जो २० से २५ दिनों की हो गयी है उसमें निकौनी तथा बछनी कर पौधे से पौधे की दूरी १२ से १५ सेन्टीमीटर रखें। मटर, राजमा एवं मसूर फसलों की बुआई प्राथमिकता से करें।
- गेंहुं एवं चना की बुआई के लिए १० नवम्बर के बाद मौसम अनुकुल होने की संभावना है। किसान भाई प्रमाणित स्त्रोत से बीज का प्रबंध कर लें। गेहूँ की सिंचित एवं सामान्य समय पर बुआई हेतु *पी०बी०डब्लू०-३४३, पी०बी०डब्लू०-४४३, सी०बी०डब्लू०-३८, डी०बी०डब्लू०-३९,एच०डी०-२७३३,एच०डी०-२८२४,एच०डी०-२९६७,के०-९१०७,के०-३०७,एच०यू०डब्लू०-२०६एवं एच०यू०डब्लू०-४६८* किस्में अनुशंसित है। चना के लिए उन्नत किस्म *पूसा-२५६, के०पी०जी०-५९(उदय), के०डब्लू०आर० १०८, पंत जी १८६ एवं पूसा ३७२* अनुशंसित हैं।
- आलू की रोपाई करें। *कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी बादशाह, कुफरी ज्योति, कुफरी सिंदुरी, कुफरी अरुण, राजेन्द्र आलू- १, राजेन्द्र आलू- २ तथा राजेन्द्र आलू-३* इस क्षेत्र के लिए अनुसंशित किस्में है। बीज दर २०-२५ क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखे। पंक्ति से पक्ति की दुरी ५०-६० से०मी० एवं बीज से बीज की दुरी १५-२० से०मी० रखें। आलू को काट कर लगाने पर २ से ३ स्वस्थ आँख वाले टुकडे को उपचारित कर २४ घंटे के अन्दर लगावे। बीज को एगलाँल या एमीसान के ०.५ प्रतिशत घोल या डाइथेन एम० ४५ के ०.२ प्रतिशत घोल में १० मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर रोपनी करे। समूचा आलू (२०-४० ग्राम) लगाना श्रेष्ठकर है। खेत की जुताई में कम्पोस्ट २००-२५० क्विटल, ७५ किलोग्राम नेत्रजन, ६० किलोग्राम फास्फोरस एवं १०० किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करें।
- रबी मक्का की बुआई करें। इसके लिए संकर किस्में *शक्तिमान १ सफेद, शक्तिमान २ सफेद, शक्तिमान-३ पीला, शक्तिमान ४ पीला, शक्तिमान-५ पीला, गंगा ११ नारंगी पीला, राजेन्द्र संकर मक्का १, राजेन्द्र संकर मक्का २* एवं *राजेन्द्र संकर मक्का दीप ज्वाला तथा* संकुल किस्में- *देवकी सफेद, लक्ष्मी सफेद एवं सुआन पीला* इस क्षेत्र के लिए अनुसंशित है। खेत की जुताई में १००-१५० क्विंटल कम्पोस्ट, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ७५ किलोग्राम फास्फोरस एवं ५० किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की दर से व्यवहार करें। बीज दर २० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा दूरी ६० X २० से०मी० रखें।
- मसुर के मल्लिका(के०-७५), अरुण (पी०एल० ७७-१२), बी०आर०-२५ के०एल०एस०- २१८, एच०यू०एल०-५७, पी०एल०-५ एवं डब्लू०वी०एल० ७७ किस्मो की बुआई करें। बुआई के समय खेत की जुताई में २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम फॉसफोरस, २० किलोग्राम पोटास एवं २० किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। बुआई के २-३ दिन पूर्व कार्बेन्डाजीम फुंदनाशक दवा का १.० ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित करें। तत्पश्चात कीटनाशी दवा क्लोरपाईरीफॉस २० ई.सी. का ८ मि.ली. प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर (५ पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करें।
- मटर की बुआई करें। इसके लिए *रचना, मालवीय मटर-१५, अपर्णा, हरभजन, पूसा प्रभात एवं भी० ऐल०-४२* किस्में अनुसंशित है। बीज दर ७५-८० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दुरी ३०X१० से०मी० रखें। बीज को उचित राइजोबियम कल्चर (५ पैकेट प्रति हेक्टेयर) से उपचारित कर बुआई करे।

आज का अधिकतम तापमानः ३०.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य के बराबर	आज का न्यूनतम तापमानः १८.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.६ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी